क्या सुदूर-दृष्टि संभव है?

कहते हैं कि महाभारत के पात्र संजय को शक्ति प्राप्त हुई थी कि वह युद्ध से दूर-दूर बैठे-बैठे वहां के समाचार जान लेता था। आजकल भी कई लोग ऐसी शक्तियों से लैस होने का दावा करते हैं। अलबत्ता एक सरल प्रयोग ने ऐसी किसी शक्ति को खारिज कर दिया है।

वैसे यूएस सरकार पूर्व में यह पता करने के लिए करोड़ों डॉलर खर्च कर चुकी है कि क्या ऐसे 'परा-जासूस' अपनी असामान्य शक्ति की मदद से दूरस्थ स्थानों का पता लगा सकते हैं। मगर हाल ही में यूके के हर्टफोर्डशायर विश्वविद्यालय के रिचर्ड वाइसमैन ने न्यू साइन्टिस्ट नामक विज्ञान पत्रिका के साथ मिलकर अत्यंत सामान्य तकनीक का उपयोग करके इस तरह की किसी भी शक्ति की उपस्थिति का खंडन कर दिया है। वाइसमैन ने इस प्रयोग के लिए मात्र एक आई-फोन और एक सॉफ्टवेयर ट्विटर का उपयोग किया।

वाइसमैन ने सबसे पहले अपने प्रयोग के लिए एक विज्ञापन दिया और सात हज़ार से ज़्यादा ऐसे ट्विटर-कर्ताओं को शामिल कर लिया। इनमें से 38 प्रतिशत को पराभौतिक परिघटनाओं में यकीन था और 16 प्रतिशत मानते थे कि उनमें इस तरह की शक्तियां हैं।

प्रयोग में किया यह जाता था कि वाइसमैन एडिनबरा के किसी अज्ञात स्थान पर बैठकर इन सब लोगों को एक संदेश भेजते थे। इन लोगों को यह अनुमान लगाना होता था कि संदेश भेजते समय वाइसमैन किस तरह की जगह पर बैठे हैं। ऐसा चार बार किया गया।

पहले तो वाइसमैन ने सब लोगों को एक संदेश भेजा और उनसे कहा कि वे उनकी स्थिति के बारे में अनुमान लगाएं। ये अनुमान उस जगह के बारे में छवियों, मानसिक बिंबों या भावनाओं के रूप में हो सकते थे। लोगों ने हरे-भरे पहाड़, पक्के कार पार्किंग, विचित्र मूर्तियों वगैरह की बात कही। बाद में वाइसमैन ने उन्हें एक वेबसाइट का पता भेजा जहां वे उस जगह (छोटा-सा बांध) का फोटोग्राफ देख सकते थे। वाइसमैन ने इन सहभागियों से यह बताने को भी कहा था कि वे पारभौतिक में कितना विश्वास करते हैं और उनके विचार वास्तविक जगह से कितना मेल खाते हैं। इसमें करीब हज़ार लोगों ने हिस्सेदारी की और पारभौतिक में यकीन करने वालों ने बताया कि उनके विचारों और वास्तविक जगह के बीच काफी समानताएं थीं।

अब शुरू हुआ वास्तविक प्रयोग। प्रतिदिन वाइसमैन किसी एक जगह से संदेश भेजते थे और सबके सामने पांच फोटोग्राफ्स रखे जाते थे जिनमें से एक सही जगह का होता था। समूह के सारे सदस्यों की मतगणना में जिस फोटोग्राफ को बहुमत मिलता उसे समूह का निर्णय माना जाता था। पहले दिन वाइसमैन एक आधुनिक इमारत के सामने बैठे थे। मगर समूह का निर्णय था वे किसी झुरमुट में हैं। दूसरे दिन जब वे एक खेल के मैदान में बैठे थे तो समूह का बहुमत था कि वे किसी सीढ़ी के नीचे खड़े थे। तीसरे दिन वे किसी घने पेड़ की छाया में खड़े थे, और बहुमत का फैसला था कि वे कब्रस्तान में हैं। चौथे दिन वाइसमैन खड़े थे एक पोस्ट बॉक्स के सामने मगर बहुमत का फैसला आया कि वे एक नहर के किनारे हैं।

विश्वासी और शंकालु लोगों का अलग-अलग विश्लेषण करने पर पाया गया कि उनमें कोई अंतर नहीं है। सब एक समान जवाब देते हैं। हां, विश्वासी लोगों ने यह ज़रूर बताया कि उनके विचारों और वास्तविक जगह के बीच उन्हें एक सम्बंध महसूस होता है। शायद इसी कारण से वे इन बातों में विश्वास करते हैं। मगर प्रयोग से स्पष्ट हुआ कि सुदूर दृष्टि का कोई अस्तित्व नहीं है। ***(स्रोत फीचर्स)***